प्रश्न - आशा-दिशा शीर्षक कविता मे कोन आवेश
छौ कविक आशा व्यक्त नवीन दृष्टिकोण
कोन स्वरूपें व्यक्त भेल ।

उत्तर :- आशा-दिशा शीर्षक रचि भेल
महत्वपूर्ण अछि जे कृति मे रचना सुन्दर
एक एवं सबल विषय - भाव कें उद्देश्य व्यक्त
करए अपन विकृताक दर्शाबए छथि ।
एहि लेल शीर्षक चयन करबा मे निम्न-
लिखित बात पर कविक ध्यान पूर्ण रूपें अछि
शीर्षक पर आवृत अछि जाहि मे नवीनता
होयत अछि, शीर्षक कए रचना विचार सँ ।
सम्बन्ध रहए कहँ चाही । कम सँ कम
शब्द मे शीर्षक के चुनाव होयबाक
चाही शीर्षक मे नवीनता उत्सुकता
एवं कौतूहल कए आकर्षण आ जिज्ञासा
उत्पन्न करबाक पूर्ण क्षमता होमए चाही ।
कविवर सुमनजीक प्रतिपदा नामक पोथी
कविवर सुमनजीक प्रतिपदा नामक पोथी
सँ प्रभावित भए आशा-दिशा के शीर्षक
चयन कएने छथि ,

पद तुलैत अगम्य छन्दक
तन्त्र दर्शित सम्पदा
मैथिली-पद रेणु गत विपदा हरए
हे प्रतिपदा ।।

सुमन जी अपन प्रतिपदा कें अमावस्याक
रूप मे स्वीकृत कएने
प्रतिपदाक रूप मे आभा उत्तरोत्तर
बाद छथि । एकर

NOKIA

Scanned with CamScanner

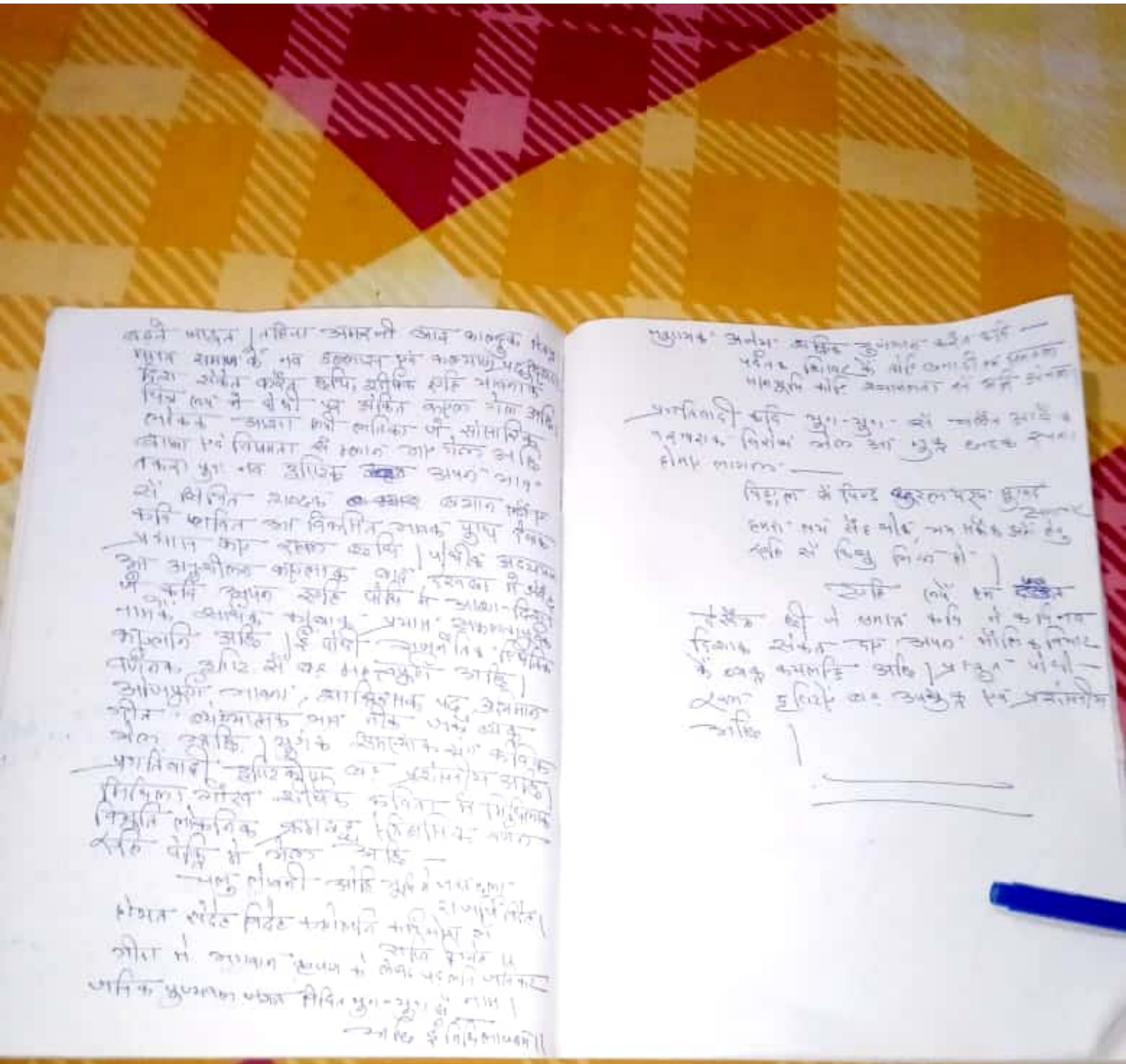

Scanned with CamScanner